

**डॉ. सुलभा रानडे**

महानिदेशक

**Dr. Sulabha Ranade**

Director General

दिनांक 14. 9.2018

अपील

प्रिय मित्रो,

हम लोग प्रतिवर्ष सितम्बर महीने में हिंदी पखवाड़ा मनाते हैं। इसमें बहुत ही उत्साह के साथ हमारे वैज्ञानिक और स्टाफ सदस्य भाग लेते रहे हैं। हमारे लिए यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है। हर कार्यक्रम का कुछ-न-कुछ उद्देश्य होता है। आज यह चिंतन करने की आवश्यकता है कि हिंदी पखवाड़े मनाने की पीछे क्या उद्देश्य है। हमारे संविधान में हिंदी को जो स्थान मिला है उसका सम्मान करने हुए अपने कार्यालयीन कार्यों में हिंदी को अपनाएं, तभी हम अपने उद्देश्य में सफल हो सकेंगे। यह सफलता तभी मिलेगी जब हम सतत प्रयास करेंगे।

हम सभी समर्पण भाव से देश हित के लिए कार्य कर रहे हैं। हम सभी की आकांक्षा है कि हमारी संस्कृति की महानता बनी रहे। हिंदी और देश की सभी क्षेत्रीय भाषाएँ हमारे देश की समृद्ध संस्कृति, धार्मिक भावनाएं और परम्परा तथा रीति रिवाजों को संजोय रखी हैं। ये सभी देश की अस्मिता हैं। अगर देश की कोई भी भाषा विलुप्त होती है तो हमारे लिए यह बहुत बड़ी क्षति होगी।

हमारे साधु संतों और ऋषि-मुनियों ने अपने धार्मिक विचारों तथा ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार करने के लिए संस्कृत, पाली, अपभ्रंश और हिंदी का सहारा लिए हैं। पाली भाषा के माध्यम से बौद्ध धर्म का प्रचार कई देशों में हुआ यह सभी जानते हैं। विभिन्न धार्मिक मतों के प्रचार में हिंदी की भूमिका अहम रही है। आजादी की लड़ाई के समय हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने देश-भक्ति की भावना जागृत करने के लिए हिंदी का सहारा लिया था। हिंदी देश के कोने-कोने में बोली जाती है।

हिंदी की विशेषताओं को देखते हुए बहुत-विचार विमर्श कर संविधान सभा ने इसे 14 सितम्बर 1949 को राजभाषा का दर्जा दिया है। हमारा यह परम कर्तव्य है कि हिंदी सीखें और इसे अपने कार्यालयीन कार्यों में अपनाएँ। आप सभी से अपील करती हूँ कि इस कर्तव्य को निष्ठा से निभाएँ और हिंदी को अपने नेमी कार्यालयीन कार्यों में अपनाएँ।

*सुलभा रानडे*

(सुलभा रानडे)